Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भारतीय समाज के उत्थान में महिला शिक्षा की भूमिका

राजीव कुमार मिश्रा
शोधार्थी, नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 94-97
Publication Issue :
September-October-2022
Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 10 Sep 2022

शोधसारांश– स्त्री शिक्षा, उत्थान की भूमिका स्त्री पुरूष के अंतर बायोलॉजिकल न होकर समाज केन्द्रित समानता के पाठ पर केन्द्रित हो। अतः भारतीय समाज के उत्थान में महिला शिक्षा की भूमिका खोए को पाने एवं सोए हुए को जगाने की विचारधारात्मक लड़ाई है, यह पुरूष वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष है। इससे समानता एवं लिंगीय सौहार्द बनाने में मदद मिलेगी।

मुख्य शब्द – भारतीय, समाज, उत्थान, महिला, शिक्षा, केन्द्रित, संघर्ष, राजनीतिक,सामाजिक।

स्त्रीवादी समीक्षा का यह पहला दायित्व हैं कि वह पाठ को पितृसत्तामक दबावों एवं आग्रहों से मुक्त करें। पितृसत्ता की विचारधाराओं से मुक्ति के क्रम में ही स्त्रीवादी विचारधारा के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। सैकड़ों वर्षों से पितृसत्ता विचारधारा के कारण ही स्त्री को दोयम दर्जे का स्थान मिला। संपत्ति, शिक्षा, सत्ता, राजनीतिक अधिकारों एवं सामाजिक अधिकारों से स्त्री को वंचित होना पड़ा। लंबे संघर्ष के बाद स्त्रियों को शिक्षा और संपत्ति के क्षेत्र में समान अधिकार मिले हैं किन्तु पितृसत्ता मूल्यों का सामाजिक वर्चस्व पूरी तरह टूटा नहीं है। आज भी अधिकतर विभागों में समस्त अधिकार पुरूषों के हाथों में है।

भारतीय समाज में स्त्री सदैव ही लिंग की अवधारणा का प्रतीक रही हैं। जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषणों के साथ हेय एवं पुरूष–सापेक्ष रूप में चित्रित किया गया हैं। इसका प्रमुख कारण यह हैं कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन सभी रचित एवं टीकाकार पुरूष थे दूसरे मातृसत्तात्मक व्यवस्था का विधान रहा है। फलतः स्वाभाविक था कि पुरूष के संदर्भ में पुरूष दृष्टि द्वारा स्त्री को देखा जाता। इसलिए पुरूष की श्रेष्ठता सम्मान, स्थान, शक्ति अधिकार और स्वार्थ की रक्षा के लिए धर्मशास्त्रों ने अनेक ऐसे आप्तवचनों, सूत्रों श्लोकों की रचना की जिन्होंने स्त्रियों के जीवन को अनेक सामाजिक नैतिक अर्गलाओं में बांध दिया उदाहरणार्थ कुछ बानिगयाँ प्रस्तुत हैं–

'ऐतरेय ब्राह्मण' ग्रंथ उसी नारी को उत्तम समझता हैं जो अपने पति को संतुष्ट करती हैं, पुत्र संतान को जन्म देती है औरपति से बढ़–चढ़ कर कभी कुछ नहीं कहती। तैत्तरीय संहिता के अनुसार चूंकि यज्ञ में एक दंड (लाठी) को दो वस्त्रों के टुकड़ों से लपेटा जाता हैं, अतः पुरूष को दो पत्नी ग्रहण करने का अधिकार हैं चूंकि एक कपड़े के टुकड़े को दो लाठियों में नहीं लपेटा जाता, इसलिए नारी को द्विपतित्व की मनाही है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सन् 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति जिसने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसी चिरवांछित मानवीय आकांक्षाओं को नैसर्गिक मानवीय अधिकार की गरिमा देकर राजतंत्र और साम्राज्यवाद के बरअक्स लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के स्वस्थ और अभिसिप्त विकल्प को प्रतिष्ठित किया। दूसरे, भारत में राजा राजमोहन राय की लम्बी जद्दोजहद के बाद 1829 ई. में सती प्रथा का कानून विरोध, जिसने पहली बार स्त्री के अस्तित्व को मनुष्य के रूप में स्वीकारा।

तीसरे, में सिनेका फॉल्स न्यूयार्क में ग्रिमके बहनों की रहनुमाई में आयोजित तीन सौ स्त्री–पुरूषों की सभा, जिसने स्त्री दासत्व की लम्बी श्रृंखला को चुनौती देते हुए तीन मुक्ति आंदोलन की नींव धरी, और चौथे, 1867 ई. में प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक और चिंतन जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा ब्रिटिश पार्लियामेंट में स्त्री के वयस्क मताधिकार के लिए प्रस्ताव रखा जाना, जिसने कालान्तर में स्त्री–पुरूष के बीच स्वीकारी जाने वाली अनिवार्य कानूनी और संवैधानिक समानता की अवधारणा को बल दिया। संयुक्त रूप में ये चारों घटनाएँ एक तरह से विभाजक रेखाएं हैं जिसके एक ओर पूरे विश्व में स्त्री उत्पीड़न की लगभग एक–सी सार्वभौमिक परम्पराएं है तो दूसरी ओर इससे मुक्ति की लगभग एक सी तड़प और अकुलाहट भरी संषर्घ कथा।

इस संदर्भ में चार स्त्रीवादी चिन्तकों–वर्जीनिया वुल्फ, सीमोन द बउवार, महादेवी वर्मा एवं जमैन ग्रीयर के विचार अवलोकनीय हैं वर्जीनिया वुल्फ (अ ऑव वन्स ओन) मानती है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था के स्त्री–विषयक आप्त वचनों को शक की निगाह से देखा जाना चाहिए क्योंकि वे भावना के लाल प्रकाश में लिखी गयी उक्तियाँ हैं ' सत्य के श्वेत प्रकाश' में नहीं।

गौरतलब हैं कि महिला शिक्षा उत्थान से समाज में महिलाओं की विशालहृदयता, उदारता और साहस के मर्दाना गुणों दावा पर पेश करने के बाद अपनी ऊर्जा को खुद के चुने हुए उद्यम में उद्देश्यपूर्ण ढंग से लगाना ही स्त्री उत्थान का पर्याय बन जाता हैं। यह वह स्थिति हैं जो औरत के हक में स्त्री की धर्मसम्मत रूढ़ छवि को तोड़कर मनुष्यभाव से ओत–प्रोत एक नयी जीवन्त छवि गढ़ने का दुस्साहस करती है।

भारतीय समाज के उत्थान में महिला शिक्षा की भूमिका समाज की मुक्ति की सामूहिक चेष्टा का नाम है इनकी प्रमुख मान्याताएँ है–

1. यह महिला शिक्षा के 'होने' की स्थिति पर विचार करना सिखाता हैं कि वह सबसे पहले वस्तुपरक ढंग से स्त्री (प्राणी) तथा शिक्षा (उनकी छवि) में पाये जाने वाले मूल अंतर को समझ सके फिर महिला उत्थान होने वाले कारण को स्वयं आत्मसम्मान और आत्मगौरव से दीप्त हो सकें।
2. महिलाएं स्वयं अपने अनुभव आपस में बांट सके।
3. स्थित्यानुसार स्वतंत्र निर्णय लेने और उसे क्रियान्वित करने की क्षमता से सम्पन्न हो सकें।
4. आर्थिक आत्मनिर्भरता अर्जित कर एक स्वतंत्र एवं जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर सकें।

हालांकि वर्तमान समाज (21वी सदी) महिलाओं के जिस उत्थान पर विचार–विमर्श कर रहा हैं उसका इतिहास चिर–काल में संकलित हैं वैदिक साहित्य में स्त्रियां अनेक क्षेत्रों में स्वाधीन थी, पुरूषों के समान थी जीवन यज्ञ–अनुष्ठान, जीवन शैली आदि के क्षेत्र में उन्हें समान अधिकार थे स्त्री–पुरूष में वैषम्य नहीं था। किंतु बाल्मीकि रामायण और महाभारत वैदिककाल से स्थिति बदल गयी स्त्रियों के पृथक

नियमों पृथक जीवन शैली पतिव्रता, साहसी पत्नी दुष्टा, पत्नी आदि के उदाहरणों का रामायण में बाहुल्य हैं। स्त्री के शरीर के प्रति आर्कषण इस युग की विशेषता हैं। स्त्री को संपत्ति के रूप में पहली बार 'बाल्मीकि रामायण' में रूपायित किया गया साथ ही उपयोग की वस्तुओं का साथ स्त्री का भी सर्वप्रथम उल्लेख मिलता हैं। साथ ही वैद्यव्य को सबसे बड़ी विपत्ति के रूप में बाल्मीकि रामायण ने ही सबसे पहले रूपायित किया।

जबकि महाभारत में नारी के प्रति स्त्री विरोधी रवैया व्यक्त हुआ हैं महाभारत में सबसे पहले नारी 'नरकस्य द्वारम्' यानी स्त्री को ही नरक का द्वार कहा गया। महाभारत के पहले स्त्रियां प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ जाती थी, यहां तक कि युद्ध राजनीति आदि में भी समान रूप से हिस्सेदारी लेती थी, उन्हें पुरूषों के समान अधिकार थे। इस काल में सिर्फ (शिखंडी) एक अपवाद है। इसी तरह स्त्री को राज्यधिकार देने का स्पष्ट रूप में निषेध किया गया। किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर स्त्री की नियुक्ति का उल्लेख नहीं मिलता। नीतिकार विदुर के अनुसार जिस प्रदेश में स्त्री, कुमार या बालक शासन करते है वे देश, नदी में पत्थर की नाव की भांति विवश होकर डूब जाते हैं लिखा है–

यत्रस्त्री यत्र कितवोंयत्र बालोडनुशासति।
मग्रन्ति तेडवशा देशा, मद्याश्मष्लवा इन।।

(महाभारत/आश्रयवासिक पर्व 44–32)

महाभारत के अंदर स्त्री प्रधान राज्यों को विद्वानों से विहीन बताकर कहा गया कि ऐसे राज्य मूर्ख मंत्रयिों द्वारा संतप्त होकर पानी की बूंद के समान सूख जाते थे यह भी लिखा कि राजा को मूर्खों और स्त्रियों से सलाह–मशविरा नहीं करना चाहिए उन पर विश्वास न करें। राज्य के ढांचे में सिर्फ गुप्तचर के पदों पर कुछ स्त्रियों की नियुक्ति का उल्लेख जरूर मिलता हैं किंतु इस पद पर काम करने वाली नारियों को प्रकारांतर से अकुलीन भी कहा गया।

कहने का तात्पर्य यह कि स्त्री अधिकार विरोधी चेतना के निर्माण में इन दो महाकाव्यों में प्रचार तंत्र की भूमिका अदा की थी। पी.वी. काणे ने लिखा है कि ''सातवीं शताब्दी से बहुत पहले ही महाभारत जन–शिक्षा का माध्यम बन चुका था और उन्नीसवीं शताब्दी की ही भांति भारत में आम श्रोताओं पुरूषों और स्त्रियों के सम्मुख उनका पाठ किया जाता था। यही बात रामायण पर भी लागू होती है। अतः स्पष्ट हैं कि महिला पैदा नहीं होती बनायी जाती हैं, जिसे पितृसत्तात्मक अवधारणा में आगे साथ चलने नहीं दिया गया। यहीं कारण है कि आज स्त्री–विमर्श, हाशिए पर स्त्री' और शिक्षा हैं किन्तु उसमें भी महिलाएं वैदिककाल में अपाला, घोषा, मैत्रेयी और साहित्य के मध्यकाल में मीरा, आधुनिक काल में महादेवी वर्मा, 'सुभद्रा कुमारी चौहान, रणक्षेत्र में रजिया सुल्तान, लक्ष्मीबाई,झलकारी बाई तथा 20वीं शताब्दी में बछेन्द्रीपाल, किरनवेदी हेमादास जैसी महिलाओं ने अपना लोहा मनवाया। शिक्षा के अधिकार में 'ज्योतिबा फूले'का अहम योगदान रहा। गौरतलब है कि महिला शिक्षा से दो परिवारों को समृद्ध किया जा सकता है जबकि पुरूष शिक्षा से एक ही वंश का उत्थान होगा अतः बदलते दौर में स्त्री शिक्षा समाज को नयी राह की ओर अग्रसर कर रही हैं। जिसका वर्तमान सरोकार नवीनीकरण मात्र हैं सतह के भीतर 'स्त्री' शिक्षा ही सर्वोपरि हैं स्त्री शिक्षा को समानता के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि उसके लिए लिंग–भेद कोई समस्या नहीं हैं। दूसरी संभावना यह भी हो सकती हैं कि स्त्रीयां लिखे और अपने को स्त्रीवाद की परम्परा से जोड़े और उसके सूत्र उसके पाठ में ही मौजूद हो। इसका अर्थ यह है कि स्त्री शिक्षा, उत्थान की भूमिका स्त्री पुरूष के अंतर बायोलॉजिकल न होकर समाज केन्द्रित समानता के पाठ पर केन्द्रित हो।

अतः भारतीय समाज के उत्थान में महिला शिक्षा की भूमिका खोए को पाने एवं सोए हुए को जगाने की विचारधारात्मक लड़ाई है, यह पुरूष वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष है। इससे समानता एवं लिंगीय सौहार्द बनाने में मदद मिलेगी।

संदर्भ–सूची

1. साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास (रोहिणी अग्रवाल) वाणी प्रकाशन (नयी दिल्ली) प्रथम संस्करण।
2. स्त्रीवाद साहित्य विमर्श जगदीश्वर चतुर्वेदी (अनामिका प्रकाशन, नयी दिल्ली) प्रथम संस्करण 2018।
3. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली– डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण।
4. स्त्री शक्ति जैसा मैंने देखा, किरन वेदी, फ्यूजन बुक्स प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2013,
5. डार्क हॉर्स (उपन्यास) नीलोत्पल मृणाल, शब्दारंभ प्रकाशन, नयी, दिल्ली, 2015 प्रथम संस्करण।
6. 'औरत के हक में' सीमा आजाद, अगोरा प्रकाशन, वाराणसी, 2021